शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

Dr. Ashok Kumar, Assistant Professor, Vivekananda College of Education, Johlaka Sohna, Gurugram

शोध सार

प्रस्तुत शोध-पत्र में शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" का निर्माण किया । शोधकर्ता ने आकस्मिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श का चयन तथा प्रदत्त संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया एवं स्वनिर्मित उपकरण माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी अभिमत मापनी का प्रयोग किया । निष्कर्ष रुप में यह पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्दावली: कला वर्ग, शहरी एवं ग्रामीण छात्र, पर्यावरणीय प्रदूषण, जागरूकता

प्रस्तावना

सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक मनुष्य का अपने पर्यावरण से अति घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। प्रकृति प्रदत्त उपहारों से मनुष्य ने सदा ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की है प्रकृति पर निर्भर मनुष्य ने अपनी स्वाभाविक जिज्ञासाओं के समाधान और अधिकाधिक सुविधापर्ण जीवन–प्राप्ति की लालसा के वीभूत अनेकानेक वैज्ञानिक अविष्कार किये। आज विश्व के कोने–कोने से पर्यावरण के प्रति चिन्ता की जो आवाज उठ रही है। वह हमारे ऋषि मुनियों ने वैदिक काल में ही दे दी थी, क्योकि वे पृथ्वी की धरती माँ मानते हुए उसकी सुरक्षा करने, उसको सवांरने, वन्य जीव जन्तुओं आदि की रक्षा करने के प्रति सदैव सजग थे हमारे ऋषि मुनियों ने वेदों की ऋचाओं का सृजन प्रकृति की गोद में ही किया था। महर्षि कपिल, कश्यप और पाराशर जैसे मुनिगण ने पर्यावरण को जन आन्दोलन के रूप में लिया था अर्थात् वनों को पुत्रवत् मानकर उनकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर बाल्मीकि चेतावनी देते हैं कि जो भी मेरे वन के पत्र एवं अंकुर का विनाश और फल फूल का अभाव करेंगें, वे निश्चित रूप से शाप के भागी होगें। पर्यावरण को सरंक्षित रखने के लिए प्रकृति तथा मानव का उचित समीकरण बहुत आवश्यक है।

आज पर्यावरण में प्राकृतिक रूप से ऑक्सीजन 21 प्रतिशत, नाइट्रोजन 78 प्रतिशत, कार्बनडाई ऑक्साइड 0.03 प्रतिशत होती है। लेकिन आज हमारे पर्यावरण में अनेक परिवर्तन हो गये हैं। जिसके कारण ऑक्सीजन की मात्रा 21 प्रतिशत से घटकर 20 प्रतिशत हो गई है तथा कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा 0.3 प्रतिशत से बढ़कर 0.4 प्रतिशत हो गई है। जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हमारे ऊपर पड़ रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही अन्टार्कटिका पर हमारी रक्षक परत (ओजोन परत) में छेद हो गए हैं जिसके कारण हमारे शरीर के अंतकों में भिन्न गति से वृद्धि हो रही हैं और लोग कैंसर जैसी भयानक बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। बड़े बड़े शहरों की तो यह हालत हो रही है कि शाम को लोगों को सांस लेने मे कठिनाई तक होने लगी है। चारों तरफ कार्बनडाई ऑक्साइड तथा कार्बनमोनो ऑक्साइड का बोल–बाला रहा है। जिससे भी अनेक प्रकार की भयानक बीमारियों का जन्म हो रहा है। डॉक्टर लोग कह रहे हैं कि मानसिक तनाव व ब्लड प्रेशर पर्यावरण प्रदूषण का ही प्रभाव है।

वायुमण्डल में कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा निरन्तर बढ़ने से एक वैज्ञानिक के अनुमान के अनुसार 21वीं सदी के अन्त तक 3.5 डिग्री तापमान में 9 वृद्धि होगी। वायुमण्डल का तापमान 3.5 डिग्री बढ़ने का असर यह होगा कि हिम खण्ड पिघलने शुरू हो जायेंगें और समुंद्र के निकट बसे देश समुंद्र में डूबने को विवश होंगें जिससे पृथ्वी पर मानव का अस्तित्व संकट में होगा। ध्रुवों पर जमीं बर्फ का पिघलना शुरू हो चुका है और समुंद्रों का तल भी ऊंचा उठ रहा है जिसके कारण कुछ देशों को इसके बारे में सोचने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है।

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के कला तथा विज्ञान विषय के विद्यार्थियों के लिये पर्यावरणीय प्रत्ययों की जानकारी, पर्यावरणीय समस्यायें, पर्यावरण संरक्षण और उसमें बच्चों की भूमिका से सम्बन्धित मॉड्यूल्स विकसित करके समुचित रूप से पर्यावरण शिक्षा देने का उपक्रम किया गया है। विद्यार्थियों के साथ–साथ ये मॉड्यूल्स शिक्षकगणों के लिये भी प्रभावी सिद्ध होंगे। उनकी रचनात्मकता का विकास हो सकेगा और पर्यावरण के विभिन्न आयामों से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित एवं संकलित करके उनके विचारों तथा दृष्टिकोणों का विस्तार मिल सकेगा।

समस्या कथन

"शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रो में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन"।

शोध के उद्देश्य

शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन हेतु **आकस्मिक न्यादर्शन विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित उपकरण **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी अभिमत मापनी** का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्ता द्वारा अध्ययन का यह उद्देश्य निर्धारित किया गया कि ''शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना''। इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना बनायी गई कि शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।'' जिसके परीक्षण के लिए निम्नलिखित विश्लेषणात्मक सारिणी तैयार हुई

सारणी

समूह	संख्या	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि	सी0आर0 मूल्य
शहरी छात्र	100	38.20	24.50	3.2	0.54
ग्रामीण छात्र	100	36.55	21.45		

df (198) at 0.05 level of significance is equal 1.96

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शहरी छात्रों का पर्यावरणीय जागरूकता के माध्यमान अंक 38.20 और मानक विचलन 24.50 है जबकि ग्रामीण छात्रों का मध्यमान अंक 36.55 और मानक विचलन 24.30 है जिनसे अभिकलित मानक त्रुटि 3.2 तथा सी0आ0 मूल्य 0.54 प्राप्त हुआ जो **df (198)** के 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 से बहुत कम है जिसके आधार पर बनायी गई शून्य परिकल्पना स्थापित हो जाती है।

अतः यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि दोनो समूहों के पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता समान स्तर की होती है। सम्प्रति प्रमुख कारण यह है कि सभी पर्यावरणीय समस्याओं से परिचित है और पर्यावरण संरक्षण के प्रति दोनों समूह जागरूक है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रो में पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी प्रदूषण के कारणों से परिचित है परन्तु उनके दुष्प्रभावों से परिचित नहीं है। इसके लिए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मस्तिष्क जो कि अत्यधिक संवेदनशील होता है जिसमें इस आयुवर्ग के बालकों में कुछ कर गुजरने का जुनून होता है। अतः इस स्तर पर बालकों को जो कुछ सिखाया जाता है, वह संस्कार के रूप में बालक पर जीवन पर्यन्त प्रभाव डालता है। अतएव माध्यमिक स्तर पर ही विद्यार्थियों को यदि पर्यावरणीय प्रदूषणों एवं विभिषिकाओं तथा उसके दृष्परिणामों से अवगत कराया जाय तो आगे चलकर ये विद्यार्थी पर्यावरणीय प्रदूषणों के प्रति सावधान रहेगे तथा पर्यावरण को सन्तुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

सन्दर्भ

- गुप्ता, प्रोफेसर एस.पी. एवं गुप्ता डॉ. अल्का – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
- सिंह, डॉ. अरूण कुमार– शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी
- लाल, आर एवं जैन – शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ
- Lahiri, S. (2011). Assessing the environmental attitude among pupil teachers inϖ relation to responsible environmental behavior: A leap towards sustainable development. Journal of Social Sciences, 7(1), 33.
- Larijani, M.,ϖ & Yeshodhara, K. (2008). An empirical study of environmental attitude among higher primary school teachers of India and Iran. Journal of human ecology, 24(3), 195-200. 264
- Lee, Y. K., Kim, S., Kim, M. S.,ϖ & Choi, J. G. (2014). Antecedents and interrelationships of three types of pro-environmental behavior. Journal of Business Research, 67(10), 2097-2105.
- Sharma,R., (2011), "Effect of School and Home Environment on Creativity of Children", MIER Journal of Educational Studies: Trends and Practices",1(2), pp. 187-196.Retrieved on 12thApril 2016 from http://www.mierjs.in/ojs/index.php/mjestp/article/viewFile/53/30
- Aarti, (2010), "Impact of School Environment on Adjustment of Adolescents of MukatsarDistrict", Unpublished M.Ed Dissertation in Education, Panjab University Chandigarh.
- Kaur, B., (2017), "A Study of Relationship of School Environment with Adjustment of Adolescents", Unpublished M.Ed Dissertation in Education, Panjab University Chandigarh.
- Bhatnagar, S., (2002), Modern Indian Education and its Problem, R. Lall Book Depot, Meerut.